"दीक्षा-संस्कार ही वास्तव में दीक्षा नहीं है.... आप बस आइये और आपकी अपनी सहायता में मुझे सहायता करने दीजिए। मैं आपको यहाँ अपना शिष्य बनाने के लिए नहीं आई हूँ..... मैं आपकी मदद करने आई हूँ ताकि आप स्वयं गुरू बन सकें।"

~-परम गुरू मां चिंग हाई ~

"हर कोई जानता है कि ध्यान कैसे किया जाये, परन्तु आप गलत चीजों का ध्यान करते हैं। कुछ लोग सुन्दर लड़कियों का ध्यान करते हैं, कुछ धन पर और कुछ व्यापार पर ध्यान लगाते हैं। जब भी आप पूरे मन से, पूरी तरह से एक चीज का ध्यान करते हैं, वही है ध्यान। मैं सिर्फ आन्तरिक शक्ति की ओर ध्यान देती हूँ, करूणा, प्रेम तथा परमेश्वर के दया भाव की ओर ध्यान देती हूँ।"

~-परम गुरू मां चिंग हाई ~

"दीक्षा का अर्थ है नई व्यवस्था में नए जीवन की शुरूआत। इसका मतलब है कि गुरू ने आपको अपनी संत मण्डली का सदस्य बनाने के लिए स्वीकार कर लिया है। अब आप साधारण मनुष्य नहीं है, आप ऊँचे उठ चुके हैं। पुराने जमाने में लो इस "बपतिस्मा" कहते थे अथवा "गुरू की शरण" में जाना कहते थे।"

~-परम गुरू मां चिंग हाई ~

दीक्षा-संस्कार
क्वान यिन पद्धति

परम गुरू माँ चिंग हाई उन सच्चे लोगों को **क्वान यिन पद्धति** में दीक्षा देती हैं जो सत्य को जानने के इच्छुक हैं। चीनी भाषा के शब्द **क्वान यिन** का अर्थ ध्वनि तरंगों का चिन्तन है। इस पद्धति में अन्तरिक प्रकाश और आन्तरिक ध्वनि दोनों का ही चिन्तन करना सम्मिलित है। प्राचीन काल से ही इन आन्तरिक अनुभवों का वर्णन संसार के सभी धर्मों के साहित्य में बारम्बार होता आया है।

उदाहरण के लिए, बाइबिल में कहा गया है, ''आरम्भ में शब्द या और शब्द ही परमेश्वर से वार्तालाप था और शब्द ही परमेश्वर (ब्रह्म) था।'' (जान १: १) यह शब्द ही आन्तरिक ध्वनि है। इसे लोगोस, शब्द, ताओ, ध्वनितरंग, नाम अथवा अलौकिक संगीत के नाम से भी पुकारा गया है। गुरू माँ चिंग हाई का कहना है, ''यह सभी प्रकार के जीवन में तरंगायित है, तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को संभाले हुए है। यह आन्तरिक संगीत सभी प्रकार के घावों को ठीक कर सकता है, सभी कामनाएं पूरी कर सकता है और सभी प्रकार की सांसारिक प्यास बुझाया जा सकती है। यह अत्यन्त शक्तिशाली है और परिपूर्ण प्रेम है। इसलिए क्योंकि हम सब इस ध्वनि से बने हैं। इसके साथ सम्पर्क हमारे हृदय में शान्ति और सन्तोष को उत्पन्न करता है। इस ध्वनि को सुनने के बाद हमारा समूचा अस्तित्व बदल जाता है, जीवन के प्रति हमारी संपूर्ण दृष्टि बेहतरी के लिए बदल जाती है।''

आन्तरिक प्रकाश, परमेश्वर का प्रकाश वही प्रकाश है जिसे संसार में प्रबोधन (ज्ञान) कहा जाता है। इसकी तीव्रता, सूक्ष्म प्रकाश से करोड़ों सूरज

की दीप्ति तक कितनी ही परिधि में जगमगा सकती है। इसी आन्तरिक प्रकाश और ध्वनि के माध्यम से ही हम परमेश्वर को जान पाते हैं।

क्वान यिन पद्धति में दीक्षा संस्कार कोई सांसारिक कर्मकाण्ड अथवा नए धर्म में प्रवेश करने का धर्मानुष्ठान नहीं है। दीक्षा संस्कार के दौरान, आन्तरिक प्रकाश और आन्तरिक ध्वनि के चिन्तन के विषय में विशिष्ट निर्देश दिए जाते हैं और गुरू माँ चिंग हाई "आध्यात्मिक संप्रेषण" प्रदान करती हैं। दिव्य उपस्थिति का यह पहला स्वाद निस्तब्धता में दिया जाता है। आपके लिए ज्ञान का यह द्वार खोलने के लिए गुरू माँ चिंग हाई का सशरीर उपस्थित रहना आवश्यक नहीं है। यह संप्रेषण इस पद्धति का एक अत्यावश्यक अंग है। परन्तु गुरू की कृपा के बिना ध्यान विधि के परिपालन से कुछ अधिक लाभ नहीं हो सकता है।

दीक्षा के समय आप तत्काल ही आन्तरिक ध्वनि सुन सकते हैं और आन्तरिक प्रकाश देख सकते हैं, इसलिए इस अवसर को कभी कभी "अकस्मात् होने वाला" अथवा "तत्काल बोध" भी कहा जाता है।

गुरू माँ चिंग हाई सभी वर्गों और धर्मानुयायियों को दीक्षा संस्कार के लिए स्वीकार करती हैं। आपको अपने वर्तमान धर्म अथवा विश्वास पद्धति को बदलने की जरूरत नहीं है। आपको किसी संगठन में शामिल होने के लिए अथवा किसी भी ऐसे काम को करने के लिए नहीं कहा जायेगा, जो आपके वर्तमान जीवन शैली के अनुकूल न हो।

लेकिन आपसे शाकाहारी बनने के लिए जरूर कहा जायेगा। शाकाहारी भोजन के लिए आजीवन प्रतिबद्धता दीक्षा ग्रहण करने से पहले की परम आवश्यक शर्त है।

दीक्षा संस्कार निःशुल्क रूप से किया जाता है।

दीक्षित होने के बाद आपके लिए प्रतिदिन क्वान यिन पद्धति से ध्यान करने का अभ्यास और पंचशील (पाँच नियमों) का परिपालन ही एकमात्र आवश्यकता है। ये नियम मार्ग दर्शक हैं जो आपको इस कार्य में मदद करते हैं कि आप ने ही स्वयं को और न ही किसी अन्य जीवधारी प्राणी को हानि पहुँचायें। इन अभ्यासों से आपको अपने आरंभिक बोध अनुभव को गहन व सशक्त करने में मदद मिलेगी और ये अन्ततः आपको जागृति के उच्चतर स्तर पर पहुँचने में

एवं आपको बुद्ध पद प्राप्त करने में सहायक होंगे। बिना प्रतिदिन अभ्यास के आप निश्चय ही अपना बोध, अपना ज्ञान भूल जायेंगे और चेतना के सामान्य स्तर पर लौट आयेंगे।

गुरू माँ चिंग हाई का लक्ष्य हमें आत्मनिर्भर बनाना है। वे हमें ऐसी पद्धति सिखाती हैं जिसका अभ्यास कोई भी व्यक्ति स्वयं कर सकता है एवं बिना किसी आश्रम बिना किसी प्रकार की निजी सामग्रियों के ही कर सकता है। उन्हें अनुयायियों, पूजकों अथवा शिष्यों की तलाश नहीं है और ना ही उन्हें चन्दा देने वाले सदस्यों से भरे पूरे किसी संगठन की ही तलाश है। वे आप के द्वारा दिया गया धन, दक्षिणा अथवा उपहार स्वीकार नहीं करेंगी। इसलिए, आप ऐसा कुछ उन्हें देने की कोशिश भी न करें।

वे आपसे केवल प्रतिदिन के जीवन में ईमानदारी और सन्त पद प्राप्त करने की दिशा में आपके ध्यान अभ्यास को ही स्वीकार करेंगी।

पंचशील

१. सचेतन जीव की हत्या न करें।

२. असत्य न बोलें।

३. जो अर्पित नहीं किया गया, उसे न लें।

४. यौन अनाचार न करें।

५. मादक द्रव्यों का सेवन न करें।

*इन नियमों का पालन करने के लिए दूध-शाकाहारी भोजन अनिवार्य है।